वाक्य शुद्धि *(Sentence Correction)*

वाक्य में आने वाली सामान्य अशुद्धियाँ — लिंग, वचन, कारक, क्रिया और शब्द-चयन की भूलें और उनका सुधार।

मध्यम · विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

वाक्य में व्याकरण की दृष्टि से आई अशुद्धियों को दूर कर उसे शुद्ध रूप में लिखना वाक्य शुद्धि कहलाता है।

वाक्य में शब्द सही हो सकते हैं और वर्तनी भी, फिर भी वाक्य अशुद्ध हो सकता है — क्योंकि शब्दों का **आपसी मेल** बिगड़ गया है।

लड़की जाता है में दोनों शब्द शुद्ध हैं, पर क्रिया कर्ता के लिंग से मेल नहीं खा रही। वाक्य शुद्धि इसी मेल को ठीक करने का अभ्यास है।

ध्यान दें

वाक्य शुद्धि में सबसे बड़ी भूल यह होती है कि विद्यार्थी **पूरा वाक्य बदल देते** हैं। नियम यह है कि **कम से कम परिवर्तन** करके अशुद्धि दूर की जाए — जो गलत है केवल वही सुधरे, शेष वाक्य ज्यों का त्यों रहे।

1. लिंग संबंधी अशुद्धि

कर्ता और क्रिया अथवा विशेषण और विशेष्य का लिंग मेल न खाना।

अशुद्ध	शुद्ध
यह मेरी पुस्तक है, वह अच्छा है।	यह मेरी पुस्तक है, वह अच्छी है।

अशुद्ध	शुद्ध
सीता ने मधुर गीत गाई।	सीता ने मधुर गीत गाया।
उसकी मृत्यु हो गया।	उसकी मृत्यु हो गई।
मुझे बहुत प्रसन्नता हुआ।	मुझे बहुत प्रसन्नता हुई।
वह एक अच्छा लड़की है।	वह एक अच्छी लड़की है।

ध्यान दें

कुछ शब्दों का लिंग प्रायः गलत मान लिया जाता है। **स्त्रीलिंग** — मृत्यु, प्रसन्नता, आत्मा, नदी, वस्तु, भाषा, आयु। **पुल्लिंग** — दही, घी, मोती, प्राण, क्रोध, गुण, जल। इनका लिंग याद होने पर आधी अशुद्धियाँ स्वयं रुक जाती हैं।

2. वचन संबंधी अशुद्धि

अशुद्ध	शुद्ध
उसके अनेक पुस्तक हैं।	उसकी अनेक पुस्तकें हैं।
मैंने अनेकों बार कहा।	मैंने अनेक बार कहा।
सब लोग अपना-अपना काम करो।	सब लोग अपना-अपना काम करें।
वहाँ बहुत से आदमी था।	वहाँ बहुत से आदमी थे।
उसके प्राण निकल गया।	उसके प्राण निकल गए।

ध्यान दें

अनेक, सब, कई, प्रत्येक — ये स्वयं बहुवचन का भाव देते हैं, इसलिए इनके साथ **"ओं" नहीं लगता**। *अनेकों, सबों, कइयों* अशुद्ध हैं। इसी प्रकार *प्रत्येक* के साथ सदा **एकवचन** आएगा — *प्रत्येक विद्यार्थी को आना चाहिए*, न कि *प्रत्येक विद्यार्थियों को*।

3. कारक संबंधी अशुद्धि

अशुद्ध	शुद्ध
मैं घर को जाता हूँ।	मैं घर जाता हूँ।
वह मुझे से बड़ा है।	वह मुझसे बड़ा है।
राम ने सोया।	राम सोया।
उसने घर आया।	वह घर आया।
मुझे यह बात का पता है।	मुझे इस बात का पता है।
वह पेड़ पर से गिरा।	वह पेड़ से गिरा।

ध्यान दें

ने का प्रयोग केवल **सकर्मक क्रिया** के भूतकाल में होता है। *सोना*, *आना*, *जाना*, *रोना* अकर्मक क्रियाएँ हैं, इसलिए *राम ने सोया* अशुद्ध है — शुद्ध है *राम सोया*। यह अशुद्धि परीक्षा में सबसे अधिक पूछी जाती है।

4. क्रिया संबंधी अशुद्धि

अशुद्ध	शुद्ध
वह कल आयेगा और मिलेगा।	वह कल आएगा और मिलेगा।
मैं यह काम कर सकता हूँ कर लूँगा।	मैं यह काम कर लूँगा।
वह पुस्तक पढ़ रहा हुआ है।	वह पुस्तक पढ़ रहा है।
आप कहाँ जा रहे हो?	आप कहाँ जा रहे हैं?
मैंने वहाँ जाना है।	मुझे वहाँ जाना है।

ध्यान दें

आप आदरसूचक सर्वनाम है, इसलिए उसके साथ सदा **बहुवचन क्रिया** आएगी — *आप जा रहे हैं*, न कि *आप जा रहे हो*। *हो* का प्रयोग *तुम* के साथ होता है।

5. अनावश्यक शब्दों का प्रयोग

एक ही अर्थ के दो शब्द साथ रख देना — यह पुनरुक्ति दोष है।

अशुद्ध	शुद्ध
कृपया आप यहाँ पधारने की कृपा करें।	कृपया यहाँ पधारें।
सर्वसम्मति से सभी ने निर्णय लिया।	सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया।
वह अपनी आत्मकथा लिख रहा है।	वह आत्मकथा लिख रहा है।
पीछे लौटकर वापस आ जाओ।	लौट आओ।
दोनों एक-दूसरे से आपस में लड़े।	दोनों आपस में लड़े।
केवल मात्र इतना ही कहना है।	केवल इतना कहना है।

ध्यान दें

आत्मकथा में *आत्म* पहले से है, इसलिए *अपनी आत्मकथा* अशुद्ध है। इसी तरह *सर्वसम्मति* में *सर्व* है, *केवलमात्र* में दो पर्याय हैं, और *वापस* में *लौटना* पहले से निहित है।

6. शब्द-चयन संबंधी अशुद्धि

अशुद्ध	शुद्ध
उसका देहांत हो गया। (पशु के लिए)	वह मर गया।

अशुद्ध	शुद्ध
मुझे आपसे निवेदन है कि आप आएँ।	मेरा आपसे निवेदन है कि आप आएँ।
वह निर्दोष है, इसलिए उसे सज़ा मिलनी चाहिए।	वह निर्दोष है, इसलिए उसे छोड़ देना चाहिए।
आपका शुभ नाम क्या है?	आपका नाम क्या है?

7. क्रम संबंधी अशुद्धि

हिंदी वाक्य का सामान्य क्रम है — **कर्ता + कर्म + क्रिया**।

अशुद्ध	शुद्ध
पढ़ता है राम पुस्तक।	राम पुस्तक पढ़ता है।
है यह मेरी पुस्तक।	यह मेरी पुस्तक है।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

वाक्य शुद्धि करते समय किस मूल नियम का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर कम से कम परिवर्तन का। जो अंश अशुद्ध है केवल वही सुधारा जाए, पूरा वाक्य बदल देना उचित नहीं।

“राम ने सोया” अशुद्ध क्यों है? शुद्ध रूप लिखिए।

उत्तर क्योंकि “ने” का प्रयोग केवल सकर्मक क्रिया के भूतकाल में होता है, और “सोना” अकर्मक क्रिया है। शुद्ध रूप — राम सोया।

“मैंने अनेकों बार कहा” को शुद्ध कीजिए और कारण बताइए।

उत्तर शुद्ध रूप — मैंने अनेक बार कहा। “अनेक” स्वयं बहुवचन का भाव देता है, इसलिए उसके साथ “ओं” नहीं लगता। इसी प्रकार सबों, कइयों भी अशुद्ध हैं।

“वह अपनी आत्मकथा लिख रहा है” में क्या दोष है?

उत्तर पुनरुक्ति दोष। “आत्मकथा” में “आत्म” पहले से विद्यमान है, इसलिए “अपनी” अनावश्यक है। शुद्ध रूप — वह आत्मकथा लिख रहा है।

निम्नलिखित वाक्य शुद्ध कीजिए — “आप कहाँ जा रहे हो?”, “उसकी मृत्यु हो गया।”, “मैं घर को जाता हूँ।”

उत्तर आप कहाँ जा रहे हैं? (आप आदरसूचक है, इसलिए बहुवचन क्रिया आएगी।) उसकी मृत्यु हो गई। (मृत्यु स्त्रीलिंग है।) मैं घर जाता हूँ। (यहाँ “को” अनावश्यक है।)